जीवन-मृत्यु : एक विवेचन

-डॉ. नसरीन जान

रक्तदान एक ऐसी प्रथा को संदर्भित करता है जहाँ लोग अपना स्वस्थ रक्त लोगों को दान करते हैं। यह मानवता का प्रतीक है जो विभिन्न धर्म व जाति के लोगों को एकजुट करने में सहायता करता है। इस जीवन रक्षक प्रक्रिया के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु विश्व स्वास्थ संगठन (WHO) ने वर्ष 1997 से 14 जून को विश्व रक्त दिवस मनाने की घोषणा की। यह दिवस नोबल पुरस्कार प्राप्त कार्ल लैंडस्टाईन की याद में पूरे विश्व में मनाया जाता हैं, जिनका जन्म 14 जून 1968 को हुआ था। कार्ल लैंडस्टाईन ने ही मनुष्य के खून में उपस्थित एग्ल्युटिनिन की मौजूदगी के आधार पर रक्तकणों का ए, बी और ओ समुह में वर्गीकरण किया।

रक्तदान के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के प्रयास जितने किए जाने चाहिए उतने प्रयत्न नहीं किए जा रहे हैं। यदि हम भारत देश की बात करें तो अब तक देश में एक भी केन्द्रीयकृत रक्त बैंक (Centralised Blood Bank) की स्थापना नहीं हैं, जिसके माध्यम से पूरे देश में कहीं पर भी रक्त की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। इंटरनेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार भारत में रक्त की आवश्यकता का केवल 75% ही उपलब्ध हो पाता है, जबकि विश्व के अन्य देशों में ये आंकड़े अधिक हैं।

रक्त की आवश्यकता केवल सड़क दुर्घटना में घायल लोगों को ही नहीं पड़ती बल्कि युद्ध में घायल सैनिकों, कैंसर के मरीज़ों तथा प्रसव पीड़ित महिलाओं को भी पड़ती है। इस प्रकार के जरूरत मंद लोगों को समय पर रक्त उपलब्ध हो जाए इसी केंद्रीय भाव के साथ नाटककार डॉ. हरिशरण वर्मा ने डॉ. मधुकांत कृत 'गूगल बाय' उपन्यास से प्रेरित होकर 'जीवन-मृत्यु' नाटक की रचना की। 'जीवन-मृत्यु' नाटक का कथ्य 66 छोटे-बडे दृश्यों में विभक्त है जिसमें नाटककार ने नाटक के प्रमुख पात्र प्रवीण के रक्त दान करने की कथा को व्यक्त किया है। प्रवीण 18 वर्षीय किशोर है जो अपनी माँ द्वारा महापुरुषों की कहानियों को सुनना बहुत पसंद करता है। अपनी माता दुर्गा द्वारा पौराणिक व ऐतिहासिक महादानियों की कहानियाँ सुनने से उसमें महादानी बनने की इच्छा जागृत होती है। प्रवीण के हृदय में इस बात ने घर कर लिया था कि महादानी बनने के लिए धनी होना आवश्यक है परंतु माँ द्वारा समझाने पर कि "जिसके पास धन का अभाव हो, वह दूसरे के लिए सेवादान, श्रमदान या फिर रक्तदान आदि अनेक प्रकार से दान कर सकता है"[1] उसकी गलत फेहमी दूर हो जाती है। अत: वह महादानी बनने की ताक में रहता है। उसकी इस भावना को प्रश्रय तब मिला जब कॉलेज में सुभाष चन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर पर सैन्य अधिकारी मेजर विपुल कुमार वर्मा द्वारा दिए भाषण में सुभाष चन्द्र बोस के उद्घोष दुहराते हैं- "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"[2] प्रवीण की मित्र अनोखी द्वारा रक्तदान के लिए अपना नाम लिखवाना प्रवीण के रक्त दान से सम्बंधित सारे संशय को दूर कर देता है और यही से उसके स्वैच्छिक रक्तदान में महादानी बनने की यात्रा भी आरम्भ हो जाती है। उसके स्वैच्छिक

रक्तदान को तीव्रता तब मिलती है जब अस्पताल में उसके पिता की मृत्यु का कारण समय पर खून का उपलब्ध न हो पाना था। भविष्य में कोई अपने प्रियजनों को न खोए वह रक्तदान शिविर का आयोजन न केवल गाँव में बल्कि शहर में भी करवाता है। वह अब जैसे पीछे मुड़कर न देखने का प्रण लेता है, बल्कि अनोखी की यह भविष्यवाणी- "तुम्हारा उत्साह देखकर तो मुझे लगता है कि एक दिन तुम रक्तदान के महानायक बनोगे।"[3] को पूरा करता है और महामहिम राज्यपाल महोदय गांधी जयंती के पावन अवसर पर उसे उसकी अद्वितीय रक्तदान सेवाओं के लिए सम्मानित भी किया जाता हैं। शायद प्रवीण रक्तदान के इस पवित्र काम में इतना बड़ा योगदान न दे पाता यदि ईशवर की उस पर कृपा न होती।यह उसी की कृपा का आशिर्वाद होता है कि कबाड़ी की दुकान से खरीदी पुरानी कुर्सी से उसे सोने के सिक्के मिलते हैं जिन्हें बेचकर ही वह रक्तदान शिविर लगवाता है।

स्वैच्छिक रक्तदान के केंद्रीय भाव के साथ लेखक ने स्वार्थी न होने, बच्चों पर अपनी इच्छाएँ न थोपने, बच्चों को उनके अच्छे कामों के लिए प्रोत्साहित करने, पढ़ाई में कम नम्बर आने पर उन्हें डाट व पीटकर निराश करने के स्थान पर उन्हें भविष्य में और अच्छा करने की प्रेरणा देना, सदैव कुछ नया करने की इच्छा जैसे विषयों को भी रेखांकित किया है।

प्रस्तुत नाटक में पात्र संख्या कुल 43 है जिन्में पुरूष पात्र अधिक तथा नारी पात्र कम हैं। नाटक का नायक प्रवीण तथा नायिका अनोखी है। नाटककार ने अनोखी और प्रवीण की प्रेम कथा पर बल न देते हुए उसे मुख्य कथा को आगे बढ़ाने का माध्यम बनाया है। अनोखी रक्तदान के सार्थक संदेश को महिलाओं के माध्यम से घर-घर पहुँचाने में प्रवीण की भरपूर सहायता करती है।

नाटक के संवाद संक्षिप्त हैं परंतु जहाँ नाटककार ने विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया है वहाँ नाटक के संवाद लम्बे बन पडे है किंतु संवाद लम्बे होने के पश्चात भी वे पाठक क्रम को बोझिल होने नहीं देते। नाटक के संवाद व पात्रानुकूल भाषा कथानक को गति प्रदान करने के साथ-साथ पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश डालने में भी सार्थक सिद्ध हुए हैं।

हरिशरण वर्मा ने जहाँ दुर्गा द्वारा महापुरूषों की कहानियों का वर्णन किया है वहाँ उन्होंने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने नाटक में कुछ स्वप्न दृश्यों का भी सृजन किया है जो स्वाभाविकता और रोचकता से परिपूर्ण है जैसे अनोखी का यमराज से अपने होने वाले पति का जीवन मांगना।

रंगमंचीयता की दृष्टि से यदि प्रस्तुत नाटक पर विचार करें तो नाटक में कुछ ऐसे तत्व हैं जो इसके मंचीकरण में बाधा उत्पन्न कर सकतें हैं जैसे अधिक पात्र संख्या, दृश्य संख्या कुल मिलाकर कह सकते हैं कि स्वैच्छिक

रक्तदान को सामाजिक आन्दोलन में परिवर्तित करने की लेखक की परिकल्पना पूर्णत: व्यवहारिक है। नाटक का उद्देश्य स्वैच्छिक रक्तदान को समाज में विशेषकर युवा वर्ग में लोकप्रिय बनाने का एक सेतु है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जीवन मृत्यु , हरिशरण वर्मा, पृ .30
2. वही, पृ. 34
3. वही, पृ. 37

डॉ. नसरीन जान

हिन्दी विभाग,

कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर